घाघर-चोली में प्रिए, करती ख़ूब धमाल।
रंग रगड़ने पर वही, हर पल करे बवाल।।

फगुआ में बौरा गए, जुम्मन और जमाल।
बच्चे तो बच्चे यहाँ, बूढ़े करें कमाल।।

.....

कान्हा डाले रंग

रंजना सिंह
"अंगवाणी बीहट"

रजनीगंधा की महक, हृद में लगती आग।
राधा, कान्हा के बिना, कैसे खेले फाग॥

तन-मन में कान्हा बसा, मनहर लगता फाग।
श्याम हृदय में राधिका, किशन प्रेम के राग॥

करवट बदली रात भर, हृदय किशन की याद।
बिन कान्हा के राधिका, कौन सुने फरियाद॥

धरे कलाई राधिका, डाले कान्हा रंग।
राधा रानी संग में, बजा रहे हैं चंग ॥

चुपके-चुपके श्याम जी,रंग लाल ले हाथ।
बरजोरी कान्हा करे, राधा रानी साथ॥

.....